अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

# संघर्ष की नारियां

**पर्यवेक्षक**
**डॉ अनीता सिंह**
**हिंदी विभाग**
**असिस्टेंट प्रोफेसर**
**जे एस विश्वविद्यालय**
**शिकोहाबाद फिरोजाबाद**

**शोधार्थी**
**रश्मि यादव**
**जे.एस. विश्वविद्यालय शिकोहाबाद**

## संघर्ष की नारियां

सार:– कहावत है कि जिसकी लाठी उसकी भैंस, जिसमें ज्यादा शक्ति होती है। वही हकूमत करता है। उसी की तू तू बोलती है। गरीब की नहीं, पर प्रेम तो सदा अमर होता है, ये न ऊच देखता न नीच देखता, न काला न गोरा, प्रेम तो प्रेम ही होता है। ये ऐसी आग है, कि सूख तो जलता है। पर इसके साथ गीला भी जल जाता है। जो कंतोऔर सूरा के साथ हुआ था। कौन जाने कब क्या हुआ, पता नहीं स्नेह पर डकैती कब पड़ जाए, दुनिया का खेल निराला है। कोई नहीं जान पाया।

उस स्थान पर मुसलमान पठानों का शासन था। जहां कहीं किसी हिंदू को देखा बस उसी पर अपना हमला जमा दिया। सहयोग और वियोग का तो हर समय साथ रहा है। कभी दुख तो कभी सुख, जीवन के ये दो पहलू हैं। ये आते रहते हैं। और आते रहेंगे। इससे कोई प्राणी बच नहीं सकता।

सत्य है:–

जेहि की बिटिया सुंदर देखी,

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

ताहि घर खोल धरे हथियार ।

## मुख्य बिंदु -

1. प्रेम की सहानुभूति
2. अन्याय के प्रति लड़ना
3. प्राणों की बाजी लगाना
4. सतीत्व की रक्षा करना
5. असहाय नारी
6. सार

बहुत समय पहले की बात है की अमृतलाल नागर खंजन नयन उपन्यास में युवा नारियों ने खूब संघर्ष किया। यहां तक कि प्रेम के खातिर अपने प्राणों की बाजी लगा दी, जीवन साथी को अपनाने के लिए घर- वार हितू, नाते,भाई बंधु सगे संबंधी सभी को छोड़कर अपनों के साथ रहने लगी। फिर भी उनका जीवन शांति से नहीं बीता। क्योंकि सामाजिक लोक चालान की उल्टी रीति हैं। उसी में है तो उसे निभाए तो सही तरीका से जीवन बीत जाता है अन्यथा नहीं।

कंतो हंसा गांव में रहती थी। जिसके मैया बाबा बचपन में ही मर गये थे। कालूराम मल्लाह मेरे मामा के लड़के हैं। मैं उन्हीं के घर पर रहती हूं। मैं उन्ही की बहिन हूं वो मेरे भाई हैं। कंतो का अभी विवाह नहीं हुआ जवान छरैरी स्त्री थी। एक आंख से कांडी, सूरा भी अंधा था। कंतो के मन में एक विचार आया, क्यों न इसी के साथ रहूं मेरा जीवन बीत जाएगा। कंतो से रुका ना गया और वह सूरा से कहने लगी। मैं काली हूं, चेहरा पर दाग कांनी भी थी। भला मेरे साथ ब्याह कौन करेगा, मेरा जन्म तो काम करवे और मार खाने के लिए हुआ है। नाव चलाकर अपना गुजारा करती हूं। सूरा का भी मन फिसल गया, मैं अंधा हूं पर उसकी आंखें हैं काम बन गया।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

सूरा न चाहते हुए भी चाहने लगा सूरा की प्रेम करने के लिए एक नहीं अनेक जवान स्त्री तैयार थी। अनारो, सुनैना, कंतो, मदालसा आदि अनारो गंभीर थी सुनैना अल्हड़ भरपूर जवानी थी, कंतो शांत प्रिय थी अंधा सूरज सुनैना के आगे और भी अंधा हो गया कालू केवट की बहिन कंतो मैं सूरज के दिल में सोई सुनैना की याद जगा दी। क्योंकि पुरुष काम ज्वालाओ से जलते हैं। वैसे ही स्त्री में भी मदन ज्वाला जलती है। कंतो सूरा को अपनी नाव में बैठाकर यमुना पार बांके बिहारी मंदिर के दर्शन के लिए ले जाती है। तभी वे दोनों सठकर बैठ जाते हैं। कंतो कहती है कि मैं तुम्हें कभी नाय भूलूंगी, मेरा जीवन तुम्हारे चरणों में सौंप दियो है सामी अब मेरा कोई पूछन वारो नायने। मां न बाप, कालू दोआ के बाप मेरे मामा हैं। उन्होंने कभी न पूछा, कंतो तू मर गई है कि जिंदी है।

सामीजी मैं तुम्हें अपना पति मान चुकी हूं जैसे रखोगे वैसे रहूंगी मल्लाहओ की बस्ती हंसा नगरी में सूरा की खूब खातिरदारी हुई। जवानी का मदिरा पिलाकर कंतो अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहती है।

चंदनमल के घर की सभी स्त्रियां बाबा को चाहने लगी। क्योंकि सूरा ने एक साड़ी को फाड़ कर इंद्रजाल दिखाया था तभी से मदालसा नाम की स्त्री सूरा के पीछे पड़ गई। अनुराग-विराग स्नेह में कंतो सूरा के बगल में आकर खड़ी हो गई और गीत गाने लगी।

जहां मन बसिया, वही मेरो रसिया

मैं तो सोय रही सपने में, मोपे रंग डालो नंदलाल

सपने में श्याम मेरे घर आए जी,

ग्वाल बाल कोई संग ना लाए जी

पौढ़ गए पलका पे मेरे संग।

टटोरन लागे मेरो सब अंग।

पिचकारी के लगत ही मेरे मन में उठी तरंग।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

मानव मिश्री कंद की, घोर पिवाय दयी भंग

हंस हंस के मोय कंठ लगाओ जी

मानो खोई- खोई दौलत पायी जी

खुल गए सपने में मेरे भाग जी

मेरी गई तपस्या जाग री

मौसो रूठियो मत सामी जी

या दुनिया में मेरो कोऊ नाय जी

क्या करूं सामी जी, मैं बड़ी अभागी हूं

मैं भी तेरी तरह अभागा हूं री।

मुझे तुझसे सहानुभूति है। तुम जैसे चाहो वैसे राखियो में ब्याह करके तिहारी जात नाय विगाडूंगी। जाति तो पुरुष की होती है स्त्री की नहीं। देखो चाहे तुम हां कहो, चाहे ना कहो गुदगुदी तो तिहारे चररन में ही मिलेगी नई से अलग कोई नहीं है सब नारी के वशीभूत हैं।

एक दिन कंतो सूरा को साथ लेकर गोपी की नगरिया जा रही थी उधर से गोपी की नगरिया का खेमा गुजर अपनी घरवाली लाजो के साथ बलदेव गांव से लौट रहा था। तभी दोनों को रास्ते में चोरों ने घेर लिया और कहा, अरी अपना घूंघट खोल, तभी उसके मर्द ने एक लाठी घोड़े की टांग पर मारी, टांग टूट गई दूसरे चोर ने तलवार निकाल ली, फिर दूसरी लाठी कनपटी पर मारी भेजा फट गया। लाजो ने मरे जवान की तलवार उठा ली और फुर्ती के साथ उसने पेट में भौंक दी वहीं पर दोनों राक्षस मारे गए। लुच्च बड़ा प्रसन्न होकर कहने लगा ये औरत कैसी है जो पल भर में रणेश्वरी बन गई। यह तमाशा कंतो चुपचाप देख रही थी। सरदार अकरम खां पचास सवारों के साथ गोपी की नगरिया में जा धमके, मारे गए जवानों में एक उनकी ही बेटा, और दूसरा उनका भांजा था सरदार बोला अगर मरे लोगों

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

को पता नहीं बताया तो सारे गांव को जिंदा जला दिया जाएगा। गांव के सभी लोग कहने लगे, साहब हमें कोई जानकारी नहीं है। तो सरदार ने गुस्से में आकर मंत्रियों को आग लगाने का हुकम दे दिया तभी घुंघट काढे हुए लाजो और उसका पति खेमा आया, पीछे से दाऊ बाबा थे बहू बोली, सिगरे गांव को यो आग मत लगाओ, हजूर अपराध मेरो है। मैंने और मेरे मर्द ने उन्हें जान से मार डारो। जो आपकी बेटी बहुन की अवरू पर हमले होते, तो वे जेई करती थी। जब ये बात सरदार ने सुनी तो सरदार एकदम शांत हो गया। वो नालायक इसी लायक थे। मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं है। वानो तुम जा सकती हैं।

सूर भी हठीला था, कंतो भी कम नहीं थी खूब हठीली। अनाथ कंतो को जीने के लिए एक सहारा चाहिए, किसी का भरोसा चाहिए शायद में सामी जी को राजी कर सकूं। कंतो सूरदास को कुटिया में सुलाकर वह खुद बाहर पेड़ के नीचे सो गई। तभी राजा सुबल सिंह ने उसकी इज्जत लूटने का प्रयास किया। कंतो जागी और चंडी बन गई दोनों वाहों को धरती पर टेककर पूरी शक्ति के साथ उठी, और सुवल का टैटूआ पकड़ लिया, मानो उसके प्राण ही निकल गए। कंतो सुवल की छाती पर बैठकर उसके गालों पर तड़ातड़ तमाचो की मार लगाते हुए राजा का राजोमद उतार रही थी। आज राजा से अपने चरन छुवा के ही छोडूंगी बोल सारे मैया कहे।

कंतो और सूर सामी के संबंध की स्त्री पुरुष में खूब चर्चा हुई। पर सब खोट राजा में, कंतो में नहीं, स्त्री अंधी होकर भी दुनिया को देख लेती है। किसी कवि ने सही लिखा है–

**राजा योगी, अग्नि, जल इनकी उल्टी रीति।**

**बचते रहियो इन चार से, थोड़ी इनकी प्रीति।।**

कंतो बराबर उनके साथ रहती थी, परंतु समाज के लोग भृम फैला रहे थे। कि यह सूरा की घरवाली है। और कालू केवट की बस्ती में भी पति पत्नी की बात फैलने लगी, बस इसी बात से दोनों की पिटाई होने लगी इतनी पिटाई हुई कि वे दोनों बेहोश हो गए। दो दिन बाद होश आया। वहां से चल दिए तब भक्त लोग कहने लगे दोनों को पीटने वालों का सत्यानाश होगा

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

**संदर्भ ग्रंथ सूची-**

**1. "नारी सशक्तिकरण" – डॉ. सविता मिश्रा**
**प्रकाशक: भारतीय ग्रंथ अकादमी**
**यह पुस्तक भारतीय समाज में नारी के अधिकारों, उनकी भूमिका और संघर्षों पर विस्तृत प्रकाश डालती है।**
**2. "नारी और समाज" – डॉ. रामशंकर अवस्थी**
**प्रकाशक: लोकभारती प्रकाशन**
**इसमें सामाजिक, धार्मिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में नारी की स्थिति का विश्लेषण किया गया है।**
**3. "भारत में महिला आंदोलन का इतिहास" – उर्मिला शर्मा**
**प्रकाशक: अनामिका पब्लिकेशन**
**यह पुस्तक भारत में स्त्रियों के आंदोलनों और संघर्षों का विस्तृत चित्र प्रस्तुत करती है।**
**4. राष्ट्रीय महिला आयोग की रिपोर्ट (National Commission for Women Reports)**
**https://ncw.nic.in/**
**यह वेबसाइट महिला अधिकारों, सरकारी योजनाओं और आंकड़ों के लिए एक विश्वसनीय स्रोत है।**
**5. "स्त्री: संघर्ष और चेतना" – मृणाल पांडे**
**प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन**

- **आधुनिक भारतीय महिलाओं की संघर्ष यात्रा पर केंद्रित एक प्रसिद्ध कृति।**